तुलनात्मक राजनीति की अर्थ, प्रकृति एवं विषय वस्तु

प्रश्न – तुलनात्मक राजनीति से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रकृति एवं विषयव्सतु या क्षेत्र पर प्रकाश डालें।

अर्थ एवं परिभाषा :– विभिन्न विद्वानों ने तुलनात्मक राजनीति को भिन्न भिन्न प्रकार से किया है। फ्रीमैन (Freeman) के अनुसार, ''तुलनात्मक राजनीति संस्थाओं तथा सरकारों के विभिन्न प्रकारों का एक तुलनात्मक विवेचन एवं विश्लेषण है।'' राल्फ ब्रेबंटी (Ralf Braibanti) के शब्दों में, ''तुलनात्मक राजनीति सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में उन तत्वों की पहचान एवं व्याख्या है जो राजनीतिक कार्यों तथा उनके संस्थागत पहचान को प्रभावित करते हैं।'' जीन ब्लॉण्डेल (Jean Blondel) ने तुलनात्मक राजनीति को वर्तमान विश्व में राष्ट्रीय सरकारों के प्रतिमानों का अघ्ययन है।

निष्कर्ष्तः तुलनात्मक राजनीति में विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, राजनीति संस्थाओं एव व्यवहारों का ऐसा तुलनात्मक अघ्ययन किया जाता है जिसेसे उनकी समानता–असमानता का ज्ञान हो तथा उन्हें समझने और उनके संबंध में भविष्य वाणी करने तथा राजनीतिक सामान्यीकरण स्थापित करने की स्थिति उत्पन्न हसे सके

प्रकृति

तुलनात्मक राजनीति का मुख्य उदद्देश्य विभिन्न प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों की तुलनात्मक विश्लेषण कर राजनीति विज्ञान में सर्वमान्य सिद्धान्तों का निर्माण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में तुलनात्मक विश्लेषण के दो पक्ष प्रकाश में आये। इस प्रकार तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति के संबंध में दो धारणाएं हैं – पहला, उर्धवाकर या लम्बवत तुलना तथा दूसरा, क्षैतिज तुलना।

१. लम्बवत (Vertical) तुलना :–इस श्रेणी में एक ही देश के विभिन्न स्तरों की सरकारो का तुलनात्मक अघ्ययन किया जाता है जैसे राष्ट्रीय सरकार, राज्य स्तरीय सरकार तथा स्थानीय सरकार। इनके बीच तुलना कर निश्चित निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसी क्रम में राज्य राजनीति का उदय हुआ। इस श्रेणी में अघ्ययन के पश्चात् विभ्न्नि स्तरीय सरकारों में निम्न समानताएं पायी जाती हैं (क) नियपों की असमानता – यद्यपि राष्ट्रीय संविधान एवं नियमों का पालन प्रत्येक स्तर पर किया जाता परन्तु इनके संचालन में नियमों एवं प्राथमिकताओं में भ्न्नि ता पायी जाती हैं। (ख) शक्ति की समानता –सभी स्तर के सरकारों को शक्तियां निश्चित होती हैं तथा संविधान से निदेशित होती हैं। परन्तु उनकी शक्तियों में विभिन्नता पायी जाती हैं जैसे राष्ट्रीय सरकारों की

तुलना में राज्य एवं स्थानीय सरकारों कम शक्ति रखती हैं। (ग) आर्थिक साधनों की समानता - यद्यपि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था समान होती है परन्तु राज्य स्तरीय एवं क्षेत्रीय आर्थिक विषमताएं विद्यमान होती हैं। उदाहरण के लिए भारत वर्ष में कुछ राज्य सम्पन्न हैं तो कुछ राज्य अत्यंत पिछड़े हैं।

२. क्षैतीज (Horizontal) तुलनात्मक :- इस श्रोणी में एक समान की विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच तुलना की जाती है जैसे द्विदलीय/बहुदलीय/एक दलीय दलीय व्यवस्था, संघात्मक एवं एकात्मक व्यवस्था, अधक्षीय एवं संसदीय व्यवस्था आदि। इसमें विभिन्न व्यवस्थाओं के बीच तुलनात्मक विश्लेषण कर सामान्यीकरण करने का प्रयास किय जाता है। विभ्न्नि राष्ट्रों से संबंधित राजनीतिक व्यवहारों की तुलना की जाती है। जीन ब्लॉण्डेल ने ठीक ही कहा है, ''हमारे पास तुलनात्मक सरकारों के अघ्ययन का केवल एक ही दृष्टिकोण शेष बचता है और वह है - समकालीन विश्व की राजनीतिक व्यवस्थाओं से संबद्ध सरकारो का राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार अघ्ययन करना।'8

तुलनात्मक राजनीतिक का विषयवस्तु

विद्वानों ने तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र को दो दृष्टिकाणों से देखा - पहला, वृहद् जिसके तहत विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के सभी प्रकार की क्रियाओं तथा अवस्थाओं का विश्लेषण किया जाता है तथा दूसरा, राजनीतिक व्यवहार, सरकारों का कार्यकरण तथा गैर राजनीतिक कार्यकलापों के राजनीतिक पक्ष आदि तक संकुचित है। वास्तव में तुलनात्मक राजनीति का विषय क्षेत्र विस्तृत है जो निम्न प्रकार से है:-

१. राजनीतिक व्यवस्थाओं का संस्थागत विवरण:- यद्यपि राजनीतिक संस्थाओं जैसे कार्यपलिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका, नौकरशाही आदि का विवरण परम्परागत विधि है फिर भी इनकी इन संस्थाओं को छोड़ा नहीं जा सकता। आधुनिक विश्लेषण में इन संस्थाओं की कार्यपदध्ति और व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है। उदाहरणार्थ व्यवस्थापिका की भूमिकाओं के ह्रास को चिन्हित करना तुलनात्मक राजनीति का विषय वस्तु है।

२. राजनीतिक समाजीकरण का अघ्ययन:- राजनीतिक व्यवस्था के सदस्यों का राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया का अघ्ययन इसका महत्वपूर्ण विषय है। क्यों कि तुलनात्मक राजनीति के विद्वानों का मानना है कि राजनीतिक समाजीकरण ही किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की सफलता और असफलता निर्धारित करता है। यह देखा गया है कि विकसित व्यवस्थाओं में राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया तीब्र होती है जबकि विकासशील देशों में कम।

३. रजनीतिक संस्कृति का अध्ययन:- हम जानते हैं कि विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के विश्वास, मूल्य, भावनाएं, आदर्श, अभिव्यक्तात्मक प्रतिमान भिन्न होते हैं जैसे चीन का मौलिक मूल्य साम्यवादी है तो अमेरिका का पुंजीवादी। इसलिए तुलनात्मक विश्लेषण में राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है।

४. राजनीतिक दलों एवं हित समुहों का अध्ययन:- लोकतांत्रिक पद्धतियों में राजनीतिक दलों एवं दबाव समुहों की धुरीय भूमिक होती है। इसलिए तुलनात्मक विश्लेषण में दलीय व्यवस्था तथा दबाव समूहों की प्रकृति का अध्ययन किया जाता है जैसे अमेरिका और इन्गलैण्ड की द्विदलीय व्यवस्था, फ्रांस एवं नेपाल बहुदलीय व्यवस्था। इसमें राजनीतिक दलों के संगठन, कार्यक्रमों, विचारधाराओं तथा भूमिकाओं का अध्ययन किया जाता है। साथ ही विभिन्न हित समूहों या दबाव समूहों की राजनीतिक सक्रियता, उनके प्रभावों तथा नीतियों को प्रभावित करने के तरीकों का अध्ययन महत्वपूर्ण हैं।

५. राजनीतिक आधुनिकीकरण और नगरीकरण:- तुलनात्मक राजनीति में शिक्षा के आधार पर नगरिकों के राजनीतिक व्यवहार, जातीय एवं धार्मिक निष्ठा में परिवर्तन तथा आर्थिक विकास द्वारा इन तत्वों का समाप्त करने संबंधी अध्ययन किये जाते हैं। विशिष्टजन की राजनीति में भूमिका, राजनीति में सेना का हस्तक्षेप तथा शहरीकरण के कारण आये परिवर्तनों एवं स्थायित्व का अध्ययन भी तुलनात्मक राजनीति के विषय वस्तु हैं।

६. राजनीतिक सहभागिता :- नागरिकों द्वारा राजनीति मे भाग लेने की स्थिति का अध्ययन करना तुलनात्मक राजनीति का विषय वस्तु है। सभी देशों में नागरिकों की राजनीतिक सहभागिता एक समान नहीं होती है। पाया गया है कि उदारवादी व्यवस्थाओं में नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी अधिक होती है जबकि अन्य व्यवस्थाओं में ऐसा नहीं होता हैं। तुलनात्मक राजनीति इन्हीं तत्वों द्वारा औचित्यपूर्णता को परिलक्षित कराती है।

७. नौकरशाही का अध्ययन :- तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक व्यवस्थाओं मे नौकरशाही के कार्यकलापों, उनकी भूमिकाओं तथा क्ल्याणकारी दायित्वों का निर्वहन का अध्ययन किया जाता है क्यों कि प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में नौकरशाही की भूमिका धुरीय महत्व का होता है क्यों कि नौकरशाही सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के वाहक होते हैं। इससे संबंधित नीति निर्माण तथा उनके कार्यान्वयन में उनके योगदान एक व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था में भिन्न भिन्न पाये जाते हैं।

८. राजनीतिक क्रियाओं काअध्ययन :- प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक प्रक्रियाएं अनवरत चलती रहती है जैसे निर्णय निर्माण प्रक्रिया, न्यायिक प्रक्रिया, विधायी प्रक्रियएं एवं राजनीतिक प्रक्रियाएं आदि। इन प्रक्रियाओं का अघ्ययन तुलनात्मक राजनीति का प्रमुख विषय है।

९. अंतराष्ट्रीय व्यवस्था में शक्ति-संतुलन :- तुलनात्मक राजनीति में युद्ध और शान्ति तथा देशों के बीच शक्ति संतुलन जैसे विषयों पर अघ्ययन किया जाता है। इससे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे विभिन्न देशों के बीच संचार की व्यवस्था, देशों के विभिन्न गुटों के बीच परस्पर सहयोग या संघर्ष, उनके बीच सैनिक समझौतों तथा उनकी विदेश नीतियों का अघ्ययन तुलनात्मक राजनीति के मुख्य विषय वस्तु रहे हैं।

१०. विश्लेषनात्मक तथा आनुभाविक अण्वेषण :- इस में राजनीतिक संस्थाओं तथा उनकी संरचनाओं की अपेक्षा क्रियाशील राजनीतिक कर्ताओं, व्यवहार के तत्वों का अघ्ययन अधिक किया जाता है। अर्थात् इन तत्वों पर अधिक बल दिया जाता है।

११. विकासशील समाजों का अघ्ययन :- जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि तुलनात्मक राजनीति का अघ्ययन का प्रादुर्भाव नवोदित देशों के कारण ही हुआ। विकासशील देशों में विकसित देशों की शासन एवं राजनीतिक व्यवस्थओं को अपनोने की प्रवृति देखी जाती है इसलिए तुलनात्मक राजनीति में एशियायी, अफ्रीकी तथा स्केण्डीनेवियन दशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं के अघ्ययन पर विशेष बल दिया जाता है।

१२. अंतर्विषयी उपागम्:- उपरोक्त सभी विषयवस्तुओं के अघ्ययन में अंतर्विषयी उपागम का उपयोग तुलनात्मक राजनीति में किया जाता है। इस प्रकार इसमें केवल कानून निर्माण, कानून का प्रयोग और विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के अंगों, राजनीतिक दलों, दबाव समुहों का अघ्ययन नहीं बल्कि इनमें समस्त व्यक्तियों, संस्थाओं, समुदायों आदि के सामाजिक व्यवहारों का भी अघ्ययन किया जाता है। इसमें विशिष्ट एवं उभरते अंगों एवं संरचनाओं को भी चिन्हित किया जाता है।